## बुक-पोस्ट पकाश्चित सामगी

गुरुकुल पत्रिका। प्रहलाद। आर्य भट

रजि० संख्या एल० १२७७

सेवा में,			De S

व्यवसाय प्रबन्धक गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वति उदस्

स्र

विषय - ज्योतिष ।

पेज = ।

= 29×16×0·10·m.
उपरामोग्रहराह्मस्ते हिवदी न्यपिष्टमन् ॥ र्

भाषरपट्रि: पूर्येड लंगम : ट। (लाह्वटेड्:

इंडप्रसियाह ग्रह्मसित उपराग इतहरतिक धाते १ ग्प्र॰को॰ उपरामिग्रहीराहुम्सितिदीचेए सिच। स् सापस्रवीपरक्तीद्विवास्तिपातं उपहि तंः एक या त्यां पुर्वा वंती दिवा कर निशाबरी १० मेवास्त का छोचि प्रतिताः कलाता स्तु चित्रात स्य एसे तु मुहती द्वादयां स्विद्यो ११॥ तेतु त्रिशार्रहाराचेः पद्यस्ति हशांपचेच पद्मीप्रवीपरीश्र के हा हो प्रामित्वा । भी १२ हो हो भागा दि मासीस्था हत् सीर्थ पने चित्रः भ्रायने हे गति र द रहे जि स्थानः एण डर्क से व सारे: १३ समरा विदिवे वाले विद्यु वे चित्र ते पुष्ण युक्ता पिए मासी वी बी मासे तुथ ने सा क्षेत्री बी मा बा बो ने में वे में व शिक्षं सहामार्गा प्राप्त हो रिए कर्त्रसः १५ वोहिते से तह स्योही तथा माची प्राप्त हो रिए कर्त्रसः १५ वोहिते से तह स्योही तथा माची प्राप्त हो रिए कर्त्रसः १५ वोहिते से तह स्योही तथा माची प्राप्त हो रिए कर्त्रसः १५ वोहिते से तह स्योही तथा माची प्राप्त हो रिए कर्त्रसः १५ वोहिते से तह स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स

सामानुकालस्प चतुर्नाम्ध र्रोपिसमयोऽक्षिपन्तिः प्रतिषद्वेद्रतिक्षित्वेतदायोक्तिपयोद्घेपाः १। चिसीदर्गाहनी वानु क्री विवस्ताम प्रे प्राप्त क्षी उद्घार विवस्त क्षेत्र क्ष शानिशीधिनीराविधियामीक्षणदीक्षपी विभावरीतमस्वित्यीरजनीपामिनीतमी देश्वेधकारणेते ।।।।।तिसिर्द्धताप्रद्धीराविद्धीर्द्धा चंद्रिकपी निता श्रामा मिवर्त्त मानाह प्रकृतापानि स्वपर दिनेष च १ प्रतापाराविद्धा प्रतापा